BA(H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पार्ट-वन
परिचायिका

प्रो० संजीव कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
M.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

Lecture-1

सिद्ध-सम्प्रदाय :-

सिद्ध सम्प्रदायक समय, भारतवर्षमे, आठमसँ बारहम शताब्दीक मध्य मानल जाइत अछि। एहि दीर्घ अवधिमे 84 टा सिद्ध विशेष प्रसिद्ध भेलाह। कहल जाइछ जे सिद्धलोकनिमे 22-23 गोटे मिथिला तथा मगध प्रान्तक निवासी छलाह। सिद्धलोकनि अपन विशेष मतक प्रचार करबाक हेतु, जनताक बीच अपनाकेँ लोकप्रिय बनयबाक हेतु, तत्स्थानीय बोलीमे लोकप्रिय पदक रचना सेहो करैत छलाह। मिथिला आ मगध प्रान्तक सिद्धगण, निश्चय, एही जनपदक भाषामे पद रचना करने होयताह।

एहि प्रान्तक किछु प्रसिद्ध लोकनिक नाम थिक - सरहपाद, सबरपाद, लुइपाद, कण्हपाद, भुसुकपाद, शान्तिदेव, कुक्कुरिपाद, विनपाद, जयनन्दी आदि।

चर्यापद

सिद्धलोकनिक पद रचना चर्यापदक नामसँ प्रसिद्ध अछि। मैथिलीक उपलब्ध रचनामे प्राचीन कृति चर्यापदक महत्व डा० जयकान्तमिश्र

अतिरिक्त विशेष स्पष्ट होइछ— "The Chiyas are important in the history of Maithili literature for constitution the link between the Sanskrit udbhat Poetry."

सिद्धलोकनिक रचना यद्यपि काव्यक प्रचारक लक्ष्य सँ नहि भेल छल, भेल छल सिद्धलोकनिक मतक जनसाधारणमे प्रचारक उद्देश्यसँ मुदा आगाँक कविगणक हेतु ओहि रचना मार्ग अवश्य प्रशस्त भेल, इनकालोकनिक कविता-रचनाक रचना द्वारे भेटलनि, पुनः रचनाक नवल-नवाकल शैली भेटलनि, रचना साँचा ठाव लगलनि— डा० आनन्द कोसिज कहैत छथि— "मिथिलामे दर्शनक क्षेत्रमे बड़ महत्वपूर्ण कार्य भेल अछि न्याय स्तम्भ आस्तिक एवं नास्तिक सब दर्शन पर पूर्ण विचार भेल अछि। ओहि क्रममे जे साहित्य हमरालोकनिकेँ उपलब्ध अछि ओ सिद्ध सिद्ध साहित्य सिद्धलोकनि अपन मतविशेषक प्रचार करबाक हेतु ओहि समयक भाषाकेँ माध्यमे गीत अथवा दोहा सबहक रचना कयलनि। राग-तालबद्ध गीत होयबाक कारणे एकर प्रचार प्रसार अवश्य भेल होयत। मतविशेषक प्रभाव समाजपर कतबा पड़लैक तकर विवेचन एतऽ अपेक्षित नहि मुदा एकर पश्चात जे भाषामे गीतक रचना भेल।

प्राक्-विद्यापतिक युगक ई महत्वपूर्ण रचना बहुत दिन धरि अन्धकारक गर्भमे पड़ल रहल। म०म०प० हरप्रसाद शास्त्री नेपाल जा कऽ एहि गौरवशाली रचनाक अनुसंधान कयलनि आ अनुसंधानसँ प्राप्त सामग्रीकेँ बौद्धगान ओ दोहा शीर्षक प्रकाशित करौलनि।

क्रमशः-

Samjit Kumar 24/08/20

Scanned by TapScanner